विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत आरक्षित वर्ग एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता, शैक्षिक आकांक्षा एवं व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा की
पी0–एच0डी0 (शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध की

रूपरेखा

2018

शोध निर्देशक | **शोधार्थी**

डॉ0 मुकेश कुमार गौतम | **शिवकान्त चतुर्वेदी**

विभागाध्यक्ष | **संकाय प्रमुख**

पेडागॉजीकल साइन्सेज | शिक्षा संकाय

शिक्षा संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा – 282005

1.0 प्रस्तावना

सदैव से ही शिक्षक का पद समाज एवं शैक्षिक कार्यक्रमों में अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। आज जबकि शिक्षा बाल केन्द्रित है, उसमें शिक्षक का महत्वपूर्ण एवं उच्च स्थान है। शिक्षा का पाठ्यक्रम, निर्देशन, कार्यक्रम, छात्र आदि कितने ही अच्छे क्यों न हो, परन्तु जब तक उसमें एक अच्छे शिक्षक द्वारा प्राण नहीं फूँके जायेगें, तब तक वह शैक्षिक पद्धति सुचारू रूप से संचालित नहीं हो सकती है। सम्पूर्ण राष्ट्र अपनी एक मात्र उन्नति के लिए शिक्षक पर ही दृष्टि लगाये है। देश की बड़ी से बड़ी शिक्षण संस्थायें शिक्षक एवं शिक्षण की ओर ही आकृर्षित हो रही है। **शिक्षा आयोग (1964–66)** ने भी कहा है कि– **''सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।''**

आज के युग में शिक्षक तथा शिक्षण दोनों ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रमुख स्थान रखते हैं। आज वह शिक्षक, शिक्षक न पुकारा जाकर राष्ट्र निर्माता तथा नयी पीढ़ी का निर्माता कहा जाता है। **माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53)** ने शिक्षक की शिक्षा में स्थिति निश्चित करते हुए कहा कि **''एक शिक्षक उसकी निजी विशेषतायें, शैक्षिक योग्यतायें, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा वह स्थान, जो वह समाज तथा विद्यालय में प्राप्त करता है आदि सभी शैक्षिक पुर्नरचना का प्रतिनिधित्व करती है। शिक्षक के कार्य पर ही विद्यालय की शान एवं राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है।''**

लैम्ब ने शिक्षक के महत्वपूर्ण दायित्व के विषय में कहा कि – **'शिक्षक बालकों के मस्तिष्क में केवल ज्ञान के तत्वों को ही विकसित नहीं करता है, बल्कि चरित्र निर्माण के तत्वों को भी विकसित करता है। दूसरे शब्दों में वह छात्रों के मस्तिक में साहस, शिष्टता तथा आत्मज्ञान के लिए बीज बोता है।'**

शिक्षा आयोग (1964–66) ने अपने प्रतिवेदन में अध्यापकों के महत्व को दर्शाते हुए कहा कि **''भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है तथा कक्षाओं का भाग्य निश्चित रूप से अध्यापकों के हाथों में हैं।''**

उपर्युक्त विचार धाराओं को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि मानव जीवन को सुचारू, सुसंस्कृत तथा राष्ट्र को समृद्धिशाली बनाने के लिए शिक्षण व्यवसाय अन्य व्यवसायों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण व्यवसाय है। राष्ट्र के भविष्य के लिए अन्य व्यवसायों की अपेक्षा शिक्षण व्यवसाय एक महत्वपूर्ण एवं अति आवश्यक है। यह वह कुंजी है जिसका यदि उचित विधि से प्रयोग किया जाये तो वह छात्र के सर्वागींण विकास के द्वार खोल सकती है। अतः आजकल शिक्षण व्यवसाय एक लोकप्रिय व्यवसाय बनता जा रहा है, विशेष रूप से महिलाओं के लिए। शिक्षण कार्य के प्रति बढ़ता हुआ अनुराग व्यर्थ ही नहीं है इस व्यवसाय की कुछ अपनी ही उपयोगितायें एवं महत्व है, वरन् यह तो समस्त व्यवसायों से सबसे अधिक प्रतिफल दायक व्यवसाय है।

राष्ट्रीय शैक्षिक संघ (1885) ने शिक्षण व्यवसाय के लाभों की ओर इंगित करते हुए कहा कि– **'शिक्षण समाज के लिये कल्याणकारी कार्य है यह ललकार युक्त समस्याओं को उपस्थित करता है। जो सामाजिक विकास के लिए अनिवार्य होती है।'**

शिक्षण आत्म विश्लेषण एवं आत्म–विश्वास को प्रोत्साहन देता है, रूचियों को विकसित करता है, उन्नति के अवसर प्रदान करता है यह निश्चय ही सुखदः एवं आरामदायक कार्य परिस्थिति है। प्रत्येक व्यक्ति इन उपयोगिताओं का अनुभव नहीं कर सकता, क्योंकि समाज में शिक्षक को छात्र एवं उनके अभिभावक दोनों ही सम्मान देते हैं। इस कारण शिक्षण व्यवसाय लोगों का प्रिय व्यवसाय बनता जा रहा है।

शिक्षकों की बढ़ती हुई माँग के कारण अनेकों सुविधायें जैसे –अच्छा वेतन, अधिक छुट्टियाँ, अग्रिम शिक्षा प्राप्त करने हेतु छात्रवृत्तियाँ आदि प्रस्तुत की जा रही है। फिर भी अधिकांश स्त्री एवं पुरुष अपनी रूचि के अनुकूल उचित व्यवस्था के प्राप्त करने हेतु कुछ आर्थिक दबाव के कारण तथा कुछ इसे धार्मिक कर्म एवं जनसेवा मानकर तथा राष्ट्र निर्माण के लिए इस व्यवसाय को स्वीकार कर रहे हैं। लेकिन जिस प्रतिबद्धता एवं लगन के साथ उन्हें शिक्षण कार्य करना चाहिए वह नहीं कर रहे इसलिये आज का शिक्षक अनेकों आरोपों के कटघरे में खड़ा हुआ

दिखायी दे रहा है। शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता में कहीं न कहीं गिरावट अवश्य आयी है जो उसे आरोपों के कटघरें में खड़े किये हुए है।

1.1 शिक्षण प्रतिबद्धता के आयाम

आज हमारे समाज में शिक्षक आरोपों के कटघरे में खड़ा है, समाज में उसकी सामाजिक छवि और स्थिति दोनों में ही ह्रास हुआ है। आम शिकायत यह है कि शिक्षक आज पढ़ाना नहीं चाहते हैं, वे मोटी तनख्वाह तो पाते हैं, लेकिन वे अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हैं। उनकी शिक्षण प्रतिबद्धता पर प्रश्न चिह्न लगाये जाने लगे हैं। अनेकों समाचार–पत्रों मे ऐसे शिक्षकों के विषय में समाचार भी प्रकाशित किये जाते हैं, जो स्कूलों या कॉलेजों में वेतन प्राप्ति के दिन ही दिखायी देते हैं। अतः यह विचारणीय प्रश्न है कि क्या वास्तव में शिक्षक अपने छात्र, समाज, शैक्षिक संस्था व राष्ट्र के प्रति संवेदनहीन हो गया है ? क्या वह अपनी शिक्षण प्रतिबद्धता खो बैठे है? यदि ऐसा है तो उसके लिए कौन सी परिस्थितियाँ या कारक उत्तरदायी है। ऐसा वह क्यों कर रहा है ? कहीं ऐसा तो नहीं है कि शैक्षिक संरचना या सामाजिक संरचना ही उसे ऐसा करने के लिए बाध्य कर रहीं हैं ? एक स्वस्थ राष्ट्र के लिए इन प्रश्नों पर विचार किया जाना आवश्यक है।

1.1.1 शिक्षण प्रतिबद्धता का आदर्श प्रारूप

सर्वप्रथम यह जानना अति आवश्यक है कि शिक्षण प्रतिबद्धता का आदर्श प्रारूप क्या है ? इसमें तो कोई सन्देंह नहीं किया जा सकता है कि शिक्षक को अपने व्यावसायिक उत्तरदायित्वों के प्रतिबद्ध होना चाहिए। यदि शिक्षक करूणा, दया, त्याग, ममता, विद्वता एवं ज्ञान की गरिमा से ओत–प्रोत दिखायी देता है। 'सादा जीवन उच्च विचार' ही उसका जीवन दर्शन और जीवन शैली है। आज भी समाज में शिक्षक से यह परम्परागत अपेक्षायें बनी हुयी हैं। यह परम्परागत शिक्षक की आचरण संहिता का विलोप तो नहीं हुआ है। शिक्षक शिक्षा हेतु **राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (1993)** ने आज भी शिक्षक–प्रशिक्षण की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि– **'शिक्षक में**

सहनशीलता, नम्रता, सुशीलता, स्नेह एवं सद्भावनाशीलता आदि गुणों का समावेश होना चाहिए। यह समाहित होने की अपेक्षा की गयी है। इसलिये राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने शिक्षक शिक्षण की प्रतिबद्धता की बहुआयामी अवधारणा दी है। शिक्षक शिक्षण की प्रतिबद्धता के पाँच आयाम बतायें गये हैं यथा –

1 अधिगमकर्ता के प्रति प्रतिबद्धता।

2 समाज के प्रति प्रतिबद्धता।

3 उद्यम के प्रति प्रतिबद्धता।

4 उत्कृष्टता प्राप्ति के लिए प्रतिबद्धता।

5 मौलिक मानव मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता।

1.1.2 अधिगमकर्ता के प्रति प्रतिबद्धता

स्वाभाविक रूप से शिक्षक की प्रथम प्रतिबद्धता तो 'शिष्य' के प्रति है। उसे अपने शिष्यों से प्रेम होना चाहिए और उसके सर्वांगीण विकास का प्रयत्न करना चाहिए। उससे अपेक्षा की जाती है कि वह यथा सम्भव सभी अधिगमकर्ताओं के मध्य समान स्नेह और करुणा का व्यवहार करेगा। उनकी त्रुतियों के प्रति सहनशील होगा, उनकी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होगा और उनके अधिगम के विकास और वृद्धि के लिए सदैव तत्पर होगा।

1.1.3 समाज के प्रति प्रतिबद्धता

शिक्षक की द्वितीय शिक्षण प्रतिबद्धता 'समाज के प्रति' है, एक शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने वृहद समाज और समीपस्थ समुदाय दोनों की समस्याओं के प्रति न केवल जागरूक होगा वरन् उनके समाधान खोजने और करने में सहभागिता के लिए प्रयत्नशील होगा। तभी तो वह सच्चे अर्थों में राष्ट्र का निर्माता कहला सकता है। शिक्षक जैसे प्रबुद्ध वर्ग को अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति न केवल जागरूक होना चाहिए बल्कि उनका निर्वहन भी करने वाला होना चाहिए। शिक्षक का अभिभावकों के साथ घनिष्ट सम्पर्क व सम्बन्ध इन उत्तरदायित्वों

को निभाने में सहायक हो सकता है। वह स्कूल और समुदाय के मध्य एक सेतु बन सकता है। वह विद्यालय के विकास के लिए सामुदायिक संसाधनों को प्रवाहमान बना सकता है। इसी प्रकार विद्यालय को सामुदायिक विकास के लिए सक्रिय बना सकता है।

1.1.4 उद्यम के प्रति प्रतिबद्धता

शिक्षक की तीसरी शिक्षण प्रतिबद्धता **'उद्यम'** आधारित है शिक्षक को अपने पेशे पर गर्व होना चाहिए। जैसा कि **जी0 सी0 भट्टाचार्य** ने लिखा है 'अपने उद्यम के साथ एकरूपता तथा एकात्मीयता की अनुभूति से ही उद्यमगत नीतियों के अनुपालन की योग्यता विकसित होती है। उद्यम के सभी कार्यक्रम तथा क्रियाकलापों में सहयोगिता, प्रतिभागिता, तथा आन्तरिक प्रतिबिद्धता से ही उन क्षेत्रों में उत्कृष्ठता की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही ज्ञान और उत्कर्ष की चाहत, उपर्युक्त ढंग से सम्प्रेषण की इच्छा तथा वैयक्तिक और उद्यगम संस्कृति के विकास को इसके लिए आवश्यक माना जाता है।'

1.1.5 उत्कृष्टता प्राप्ति के लिए प्रतिबद्धता

शिक्षक की चौथी शिक्षण प्रतिबद्धता **'श्रेष्ठता'** प्राप्ति के लिए प्रतिबद्धता को माना जाता है। शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह कक्षा–कक्ष, विद्यालय तथा समुदाय में जो भी कार्य करेगा उसे यथा सम्भव उत्कृष्ट ढंग से करेगा। उसका व्यवहार तो अनुकरणीय होना ही चाहिए। तभी तो उसके छात्र भी श्रेष्ठता की उपलब्धि के लिए प्रेरित हो सकेंगे।

1.1.6 मौलिक मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता

शिक्षक की पांचवी अर्थात अन्तिम शिक्षण प्रतिबद्धता 'मौलिक मानवीय मूल्यों से सम्बन्धित है। शिक्षक में ईमानदारी, सहयोग की भावना, निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता, बौद्धिक ईमानदारी, राष्ट्र प्रेम और भक्ति, नियमितता और समयानुवतिता जैसे मूल्यों के अभाव में वह अपनी उपर्युक्त चारों व्यावसायिक प्रतिबद्धताओं को भी नहीं निभा सकता।

शिक्षक प्रतिबद्धता के यह बहुआयामी प्रारूप है और यह सभी आयाम आपस में अन्तः सम्बन्धित दिखायी देते हैं। एक आयाम की प्रतिबद्धता के व्यवहार आदर्श दूसरे आयाम की प्रतिबद्धता में भी शामिल हो सकते हैं। शिक्षक से अपेक्षायें तो बहुत की जाती है कि वे उच्च आदर्शों को प्रकट करें। उनके परम्परागत शैक्षिक आदर्शों की निरन्तरता दिखायी देती है वे शैक्षिक जगत की कठोर यथार्थ वास्वविकताओं से नहीं उपजी है बल्कि हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं पर आधारित दिखायी देती है चूंकि शिक्षक की शिक्षण प्रतिबद्धता का यह प्रारूप न केवल समाज के जनसाधारण के मन में रचे–बसे हैं, वरन् शैक्षिक एवं सामाजिक जन–नेताओं की मानसिकता में भी विद्यमान हैं शिक्षक समुदाय सामाजिक आलोचना का शिकार होता जा रहा है ऐसा होना स्वाभाविक भी दिखायी देता है, क्योंकि उसके व्यवहार और योगदान को मापने और उसकी भूमिका के निर्वहन का मूल्यांकन करने के पैमाना तो यही है।

शिक्षक की शिक्षण प्रतिबद्धता से तात्पर्य शिक्षकों के उन कार्यों के प्रति प्रतिबद्धता से है जो कि शिक्षक आचार संहिता द्वारा उनके लिए निर्धारित किये गये हैं। शिक्षण प्रतिबद्धता शिक्षकों की एक ऐसी मानसिक अवस्था, रूझान अथवा कर्तव्य संकल्प है जिसके फलस्वरूप शिक्षक अपने क्रियाकलापों के प्रति समर्पित तथा जागरूक रहते हुए अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर शिक्षा के लिए ही कार्य करते है।

अध्यापकों की आचार–संहिता में नेशनल एजूकेशन एसोशिएशन ने शिक्षकों के लिए छः सूत्रीय आचार संहिता बनायी है।

1 शिक्षक का अर्थ है ज्ञान संक्रमण का दायित्व लेने वाला एक कार्यकर्ता। शिक्षक एक ज्ञान सागर है, जो अपनी योग्यता के अनुसार सभी छात्रों को ज्ञान अमृत पिलाने वाला हो।

2 अध्यापक को अभिभावक तथा समाज से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखने चाहिए। बालक के विकास के लिए शिक्षक तथा अभिभावक दोनों जिम्मेदार है।

3 शिक्षक को सामाजिक जिम्मेदारियों का एहसास होना चाहिए ताकि सामाजिक स्थितियों में परिवर्तन के अनुसार शिक्षा का स्तर ऊँचा उठाना होना चाहिए।

4 शिक्षक को यह मालूम होना चाहिए कि अध्यापन एक सेवा है। इसमें आर्थिक लाभ पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

5 अध्यापक का यह कर्तव्य है कि वह अपनी व्यावसायिक कुशलता बढ़ाने का सदैव प्रयास करें। अध्यापक को सदैव विद्यार्थी बने रहना चाहिए अर्थात् सदैव अध्यनरत् रहना चाहिए और आधुनिकतम् ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

6 शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति करने के लिए पाठ्यक्रम अध्यापन प्रवृत्तियों के सन्दर्भ में नये शोध करने चाहिए और नई मान्यताओं की स्थापना करनी चाहिए।

उपरोक्त सभी छः आचार संहितायें एक शिक्षक के लिए तैयार की गयी है क्योंकि शिक्षकों की समाज में एक विशिष्ट भूमिका है, लोग बड़े भरोसे और विश्वास से नई पीढ़ी के सामाजीकरण और शिक्षा–दीक्षा के लिए उनके हाथों में अपने पाल्यों को सोंपते हैं। उन्हें भरोसे का मान रखना ही होगा, वह यह कहकर अपने दोषों से मुक्ति नहीं पा सकते कि समाज में और लोग भ्रष्ट हैं तो हम भी भ्रष्ट हो गये तो क्या हो गया? शिक्षक तो समाज के विवेक का रखवाला है, वह मार्गदर्शक है, आज समाज में जो भी विसंगतियों मौजूद है उसके लिए वह स्वयं भी कुछ हद तक जिम्मेदार हैं क्योंकि यह भ्रष्ट पीढ़ी भी कहीं न कहीं कभी न कभी अपने शिक्षकों की कक्षाशालाओं से ही निकली होगी, उनके बनाने में हम शिक्षकों का कुछ न कुछ हाथ है। शिक्षक आंशिक रूप से ही सही जिम्मेदार तो अवश्य है। इसलिए इस पेशे में जो भी आये, वह यह सोच–समझ कर आये कि उसे एक मिशन पूरा करना है, न कि रोजी–रोटी कमाने का साधन मात्र उपलब्ध करना है **जी0 सी0 भट्टाचार्य (2002) के शब्दों में** – 'समाज, समुदाय तथा राष्ट्र को सिर्फ इस वर्ग से अपेक्षा ही रखते हुए उन्हें अपनी अपेक्षा का शिकार बनाने के लिए अलिखित अधिकार का त्याग भी पहले करना होगा। उन्हें वेतनभोगी कर्मचारी बनने से बाज आना होगा और जिन कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों के निर्वहन की उनसे अपेक्षा हो, उन्हें स्पष्ट करते हुए स्वयं उन्हें अपनाने के लिये तत्पर होना पड़ेगा। आचार संहिता अध्यापक के लिए अपरिहार्य है समाज व जनसेवाओं के लिए नहीं, यदि यह आधारभूत अवधारणा हो तो द्वैतसत्तात्मक यह समाज विनाश के माध्यम से ही

सुधर सकता है विकास के माध्यम से नहीं। शिक्षक को अपने उत्तरदायित्वों के प्रति प्रतिबद्ध होना ही पड़ेगा।

1.1.7 शैक्षिक आकांक्षा

प्रत्येक व्यक्ति अपने बचपन से ही कुछ न कुछ लक्ष्य निर्धारित करता है कि मुझे आगे क्या बनना है उसके लिए वह शिक्षा–दीक्षा लेता है, शिक्षा–दीक्षा लेने के बाद वह अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ता है जिन्हें वह प्राप्त करना चाहता है या यूँ कहें कि वह प्राप्त करने की लालसा रखता है। यह आवश्यक नहीं है कि जो व्यक्ति लक्ष्य निर्धारित करता है वह उसे प्राप्त ही कर ले, वह असफल भी हो सकता है। लक्ष्यों का निर्धारिण कई रूपों या प्रयोगों के द्वारा निर्धारित होता है। इन प्रयोगों के माध्यम से व्यक्ति अपने आंकाक्षा स्तर को निर्धारित करने का प्रयास करता है। व्यक्ति सदैव उच्च लक्ष्य को निर्धारित भी करता है इसलिये वह लक्ष्य को प्राप्त करने में कभी–कभी असफल भी हो जाता है जिससे वह निराश एवं हताश का शिकार बन जाता है। **जेम्स ड्रेवर** ने लिखा है कि– 'एक व्यक्ति की अपने स्वानुभवों के द्वारा सफलता एवं असफलता की प्राप्ति उसके आकांक्षा स्तर को निर्धारित करता है। जिसके आधार पर वह आगे चलकर कार्य करता है। कभी–कभी जब व्यक्ति को निर्धारित अभीष्ट लक्ष्य की प्रप्ति नहीं हो पाती तो वह अपने लक्ष्य को दूसरी ओर बदल देता है इस बदले हुए परिदृश्य में वह इस प्रकार से कार्य नहीं कर पाता जिसे वह पूर्व निर्धारित लक्ष्य में करना चाहता था। **जे0 डी0 फैंक** ने लिखा है कि – किसी परिचित कार्य में व्यक्ति अपनी अतीत की उपलब्धि को जानते हुए भी भविष्य में जिस सीमा तक उपलब्धि की आकांक्षा करता है उससे व्यक्ति की शैक्षिक आकांक्षा का निर्धारण होता है।

शैक्षिक आकांक्षाओं के निर्धारण से व्यक्ति अपने आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर व्यक्ति अपने स्वयं के लिए निर्धारित जिन लक्ष्यों तक वह पहुँचना या उन्हें प्राप्त करना चाहता है। यह लक्ष्य उसे उच्च शैक्षिक योग्यता, परिवार की आर्थिक स्थिति, परिवार में प्राप्त भौतिक सुविधाओं, समाज में परिवार की सामाजिक एवं राजनीति पहुँच,

परिवार के मुखिया या अन्य सदस्यों का उच्च पद पर होना आदि पर भी निर्भर करता है जिसके आधार पर व्यक्ति शैक्षिक आकांक्षाओं को पालता है।

1.1.8 व्यक्तित्व के निर्धारक तत्व या कारक

व्यक्ति सम्पूर्ण रूप से अपने आप में जो कुछ भी होता है वही उसका व्यक्तित्व कहलाता है। इसमें उसकी सभी बातें सम्मिलित होती है। उसका रंग–रूप, आकृति, शारीरकि बनावट, डील–डौल, बाह्य शारीरिक अंग, आन्तरिक अवयव– उनकी संरचना एवं कार्य प्रणाली, बाह्य एवं आन्तरिक व्यवहार, उसके द्वारा की गयी रचनात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक व्यवहार सम्बन्धी क्रियाऐं, उसका चेतन, अर्द्ध चेतन एवं अचेतन व्यवहार आदि। इन सभी बाते और विशेषताओं से युक्त हम अपने आप में जो कुछ भी होते हैं वह किसी एक दिन और घटना का परिणाम नहीं होते हैं। इसी तरह से हमारा व्यक्तित्व वृद्धि एवं विकास की एक ऐसी सतत् प्रक्रिया का परिणाम होता है जिसका प्रारम्भ माँ के गर्भ में गर्भाधान के पश्चात् ही शुरू हो जाता है। गर्भाधान के बाद नहीं, गर्भाधान के समय ही माँ–बाप के रज और वीर्य के माध्यम से जिन क्रोमोसोमस तथा जीन्स का हस्तान्तरण बालक को पैदा किया जाता है उनका भी व्यक्तितत्व सम्बन्धी गुणों एवं विशेषताओं के निर्धारण में विशेष महत्व रहता है। इस तरह गर्भाधान के समय होने वाले वंशानुक्रम सम्बन्धी हस्तान्तरण से प्रारम्भ होकर बालक के वृद्धि एवं विकास को जो कुछ भी प्रभावित करता है तथा उसकी व्यवहार सम्बन्धी बातों को एक विशेष प्रकार के साँचें में ढालने का प्रयत्न करता है उस कार्य मे जिन बहुत से तत्व, कारक एवं परिस्थितियों की भूमिका रहती है उन्हें ही व्यक्तित्व के निर्धारक कारक की संज्ञा दी जाती है।

व्यक्तित्व सम्बन्धी निर्धारक कारक तत्व बालक के वंशानुक्रम एवं वातावरण दोनों में ही समान रूप से उपस्थिति रहते है तथा किसी भी एक समय में व्यक्ति जो कुछ भी होता है वह अपने वंशानुक्रम तथा वातावरण की संयुक्त उपज के रूप में ही जाता है। व्यक्तित्व के निर्धारक कारकों द्वारा व्यक्तित्व का निर्धारण करने अथवा उसका निर्माण करने की प्रक्रिया उसके सम्पूर्ण जीवन में अनवरत चलती रहती है। कौन–सा बालक आगे चलकर किस प्रकार के व्यक्तित्व

सम्बन्धी गुणों से विभूषित होगा यह सभी कुछ व्यक्तित्व के निर्धारक कारकों पर निर्भर करता है जो कि व्यक्ति के व्यक्तित्व को अच्छा या बुरा, भव्य या साधारण, रोबीला या दब्बू, बहिर्मुखी या अन्तर्मुखी, सामाजिक या असामाजिक, सामान्य या असामान्य के रूप में ढालने की पूरी क्षमता रखते हैं।

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व से हम उसके व्यवहार का बोध करते है वह व्यक्ति किसी को बहुत प्रिय लगता है तो किसी को अप्रिय लगता है। यह उसके गुणों पर निर्भर करता है। व्यक्तित्व से आशय व्यक्ति के समस्त शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक गुणों के उस गत्यात्मक संगठन से है जो उसका वातावरण से सामांजस्य स्थापित करता है। व्यक्तित्व की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए मनोवैज्ञानिकों के द्वारा भी व्यक्तित्व के कई सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है जो अपने–अपने तरीके से व्यक्तित्व के प्रत्यय एवं मानव–व्यवहार को परिभाषित करते हैं व्यक्तित्व के प्रमुख सिद्धान्तों में **फ्रायड का मनोविश्लेणात्मक सिद्धान्त, शैल्डन तथा क्रेचमर का शरीर रचना सिद्धान्त, ऑलपोर्ट तथा कैटिल के शीलगुण सिद्धान्त, मैसलों तथा मुरे के माँग सिद्धान्त प्रमुख** है। फ्रायड ने इंद (Ed) अहम (Ego) तथा परा अहम (Super Ego) अचेतन तथा अर्द्धचेतन अवस्थाओं एवं लैगिंक ऊर्जा लिबिडो की सहायता से व्यक्तित्व को स्पष्ट किया है। शैल्डन ने शरीर आकृति के आधार पर व्यक्तित्व को गोलाकति, आयताकृति तथा लम्बाकृति नामक तीन वर्गों में बाँटा है जबकि क्रेचमर ने इसी आधार पर व्यक्तित्व को स्थूलकाय, सुडौलकाय, कृशकाय तीन वर्गों में विभक्त किया है। ऑलपोर्ट ने सामान्य शीलगुणों एवं व्यक्तित्व शीलगुणों की सहायता से तथा कैटिल ने प्राथमिक व्यक्तितत्व कारकों की सहायता से व्यक्तित्व की विवेचना करने का प्रयास किया है। मैसलों ने व्यक्तित्व की माँगों को पांच आरोही वर्गों में बाँटकर अपना सिद्धान्त विकसित किया जबकि मुरे ने व्यक्ति की अन्तर्निहित आवश्यकताओं के रूप में अपना व्यक्तित्व माँग सिद्धान्त प्रतिपादित किया है। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को कई प्रकार से वर्गीकृत किया है यथा– अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी तथा उभयमुखी आदि। आकर्षक रंग–रूप, सुमधुर वाणी, सुंगठित कद–काठी, श्रेष्ठ बुद्धि, चिन्तन एवं तर्क शक्ति, सृजनशीलता, मैत्रीभाव, सामाजिकता, सांवेगिक स्थिरता, नैतिक चरित्र आदि अच्छे व्यक्तित्व के कुछ प्रमुख गुण है। मानवीय व्यक्तित्व

को जैवकीय तथा वातावरणीय दोनों ही प्रकार के कारक प्रभावित करते हैं। कैटिल के 16 व्यक्तित्व कारक है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अपनी "Report of the task force on code of professional ethics for university and college teachers" में विश्वद्यिालयों तथा महाविद्यालयों के शिक्षकों एवं प्राचार्यों के लिए (27 Dec. 1988) आचार संहिता तैयार की है।

अध्यापन एक महत्वपूर्ण कार्य है। अध्यापन एक अपरिपक्त, अपरिष्कृत तथा अनपढ़ बालकों को रूप देता है, उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को तराशता है। यह काम अत्यन्त नाजुक तथा जोखिम भरा है। शिक्षक में नैतिक मूल्यों की शक्ति होनी चाहिए तभी वह व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता हैं। अध्यापक के शिक्षण का सम्बन्ध व्यक्ति निर्माण से हैं वह अपने छात्रों के जीवन में परिवर्तन लाता है। यह शिक्षण मानव सेवा का कार्य करता है। अध्यापक का दृष्टिकोण मानवतापूर्ण होना चाहिए। यदि शिक्षक का दृष्टिकोण अमानवीय है तो वह शिक्षा का भारी नुकसान करेगा। अतः शिक्षक को मानवीय मूल्यों का ज्ञान होना अति आवश्यक है। इस ज्ञान के बल पर ही वह अपनी भूमिका सफलता के साथ निभा सकता है। इसलिये जो व्यक्ति इस व्यवसाय में आना चाहता है वे अपना आत्मा–विशलेषण एवं निरीक्षण करें। यदि वे इस व्यवसाय में धन कमाने के लिए आना चाहता है तो उन्हें इस व्यवसाय में नहीं आना चाहिए। अंग्रेजी में कहावत है– **"If gold rust what will iron do"** अर्थात् सोने में जंग लग गया तो लोहे का क्या होगा ? **यदि शिक्षक समाज ही भ्रष्ट तरीकों का उपयोग करेगा तो विद्यार्थी तथा समाज क्या सीखेगा ?** शिक्षण व्यवसाय को शिक्षक की शिक्षण प्रतिबद्धता, शैक्षिक आकाक्षाओं एवं व्यक्तित्व के निर्धारक कारक भी कहीं न कहीं प्रभावित अवश्य करते हैं जिसके आधार पर भविष्य की पीढ़ी निर्भर करती है। अतः शिक्षक को अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध अवश्य होना चाहिए जिसका प्रभाव उनके विद्यार्थियों पर अवश्य ही पड़ेगा तथा देश के लिए अच्छे नागरिक भी तैयार हो सकेंगें।

2.0 समस्या का प्रादुर्भाव

देश को स्वतन्त्र हुए 69 वर्ष पूरे हो चुके हैं, देश के प्रत्येक क्षेत्र में विकास तेज गति से हो रहा है लेकिन यदि हम शिक्षा के क्षेत्र को देखें तो उसकी गुणवत्ता की वृद्धि दर बहुत ही कम है, उसमें निरन्तर कमी होती जा रही है। विभिन्न संगोष्ठियों, शैक्षिक सम्मेलनों आदि का समय–समय पर आयोजन भी किया जाता रहा है जिनमें शिक्षा प्रशासन के अधिकारियों एवं शिक्षाविदों ने हमेशा शिक्षा के गिरते स्तर पर चिन्ता व्यक्त की है और इसकी पूर्ण जिम्मेदारी शिक्षक वर्ग को ही माना है। स्वतन्त्र राष्ट्र में योग्य नागरिक की ही आवश्यकता होती है और इन्हें तैयार करने का दायित्व शिक्षकों को ही माना गया है। शिक्षकों के दायित्वों में भी निरन्तर गिरावट जारी है इस गिरावट के पीछे कौन–कौन से कारक उत्तरदायी है इस विषय में भी सवाल खड़े होने लगे हैं और विभिन्न शोधकार्यों के परिणाम भी हमें इस ओर इंगित कर रहें हैं।

आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की अपनी शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृति आदि अनेक समस्यायें विभिन्न कालों में रही है जिसके आधार पर उनकी शैक्षिक एवं शिक्षण प्रतिबद्धतायें भी निर्धारित होती रही है। रस्तोगी (1977), डिसूजा (1980), चिटनिस (1981), शर्मा (1981), राय (1984), गोगेट (1985), कुलकर्णी (1985), शर्मा (1988), भारत (1992), जैन (1993), सिंह (2002), माथुर (2004), अग्निहोत्री (2004), केरी (2005), योसभ (2007), द्विवेदी (2008), यादव (2009), अहलावत (2011), के0 रजवी (2013), एम0 जैन (2013), एफ0 ज्योडिस (2013), एम0 गहलावत (2013), हरप्रीत (2013), ए0 कुमार (2013) के0 अमरूथ (2013), आदि ने शिक्षण प्रतिबद्धता के क्षेत्र में किये गये अध्ययन देखने को मिले हैं।

कुछ शोध अध्ययनों में आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक आकाक्षायें, सृजनात्मक मूल्य, मनोविज्ञानिक आवश्यकतायें एवं अभिवृत्तियों का भी अध्ययन किया गया है यथा– जे0 डॉनाल्ड एवं वी0 बरून (1976), वी0 ई0 अकान्डले (1987), एस0 सुन्दराजन एवं ई0 वी0 लिली (1990), के0 एस0 राजपूत (1992), एन0 टी0 खोबरा मडे (1993), एस0 एल0 हसन (1994), जी0 सी0 प्रधान एवं श्री अय्यर (1997), एस0 के0 शुक्ला एवं ए0

अग्रवाल (1997), जी0 के0 एल0 लिलेन्द्र (1998), सी0 वुच एवं वी0 डॉलटन (2002), बोर्गन (2002), एफ0 बनाई एवं डी0 एस0 रिस्सा (2003), डी0 वी0 अन्जेला एवं वी0 केरी (2005), के0 यू0 आर0 रहमान (2006), डब्ल्यू पाटौन एवं पीटर कूड (2013), ए0 अनीस (2013), एस0 सरूआ (2014), आदि के अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकाक्षायें, सृजनात्मक मूल्य मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं एवं अभिवृत्तियों आदि पर ही अध्ययन किये गये है।

विभिन्न अनुसन्धान कार्यों एवं संगोष्ठियों की रिपोर्ट के अध्ययन से यह तथ्य भी दृष्टिगोचर होता है कि शिक्षण प्रतिबद्धता एवं शैक्षिक आकाक्षाओं को उनके व्यक्तित्व के कारक भी कहीं न कहीं प्रभावित करते हैं। व्यक्तित्व कारकों का अध्ययन खान (1995), जोहन (1998), अस्टोन (1998), उपाध्याय (2002), रीवमैन (2004), सिंह (2005), कुलक्षेष्ठ (2005), नायक (2006), शर्मा (2006), क्रीड़ (2007), ऐडन (2007), मित्तल (2007), जैन (2009), सिंह (2010), त्यागी (2011), बिरला (2012), वेदई (2013), चार्ली (2013), बर्टर (2013), अनु (2013), अर्चना (2013), परवन (2013), जूरी (2013), श्रीधर (2013), आदि के द्वारा अध्ययन किये गये हैं।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में एक ऐसे अध्ययन किये जाने की आवश्यकता अनुभूति की गयी कि आरक्षित वर्ग एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षक जो कि विभिन्न शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों में कार्यरत है जो बी0 एड0 के छात्र–छात्राओं को सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करे रहे हैं, शहरी एवं ग्रामीण परिवेश से सम्बन्धित है जो केन्द्रीय, राज्य सरकार, स्थानीय निकायों एवं गैर सरकारी संगठन द्वारा संचालित किये जा रहे हैं। शिक्षक–प्रशिक्षक संस्थानों में कार्य कर रहें हैं उनके शैक्षिक अनुभव, सामाजिक आर्थिक स्तर तथा यौन भेद के सन्दर्भ में उनकी शिक्षण प्रतिबद्धता, शैक्षिक आकांक्षा एवं व्यक्तित्व कारकों का अध्ययन किया जाये जो कि उन्हें विभिन्न प्रकार से कार्य करने के लिए उत्साहित करते हैं।

शोधार्थी के मन में यह भी जिज्ञासा उत्पन्न हुई है कि शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत् आरक्षित वर्ग एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता में क्या कोई अन्तर है ? उनके शैक्षिक आकांक्षा स्तर में क्या कोई भिन्नता पाई जाती है ? इसके साथ ही साथ आरक्षित

एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षकों के व्यक्तित्व कारकों में कोई अन्तर भी होता है ? उपरोक्त सभी प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया है।

2.1 समस्या कथन

विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षक –प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत आरक्षित वर्ग एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता, शैक्षिक आकांक्षा एवं व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन।

2.1.1 समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

2.1.2 विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय स्तर से तात्पर्य उन विद्यालयों से है जिन्हें केन्द्र एवं राज्य सरकार के विभिन्न अधिनियमों के माध्यम से स्थापित किया गया है, जहाँ पर 10+2 अथवा इण्टरमीडिएट के बाद स्नातक एवं स्नातकोत्तर की कक्षायें संचालित होती हैं जिनमें स्नातक एवं स्नातकोत्तर तक शिक्षा की व्यवस्था से है।

2.1.3 शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान

शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान से अभिप्राय उन संस्थाओं या महाविद्यालयों से है जहाँ पर शिक्षक–प्रशिक्षण के लिए कक्षाऐं संचालित होती है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा उन्हें शिक्षक–प्रशिक्षण के लिए मान्यता दी गयी है और वहाँ पर बी0 एड0 शिक्षक–प्रशिक्षण की व्यवस्था से है।

2.1.4 आरक्षित वर्ग

आरक्षित वर्ग से तात्पर्य उस मानव समूह, मूल वंशों या उन जातियों से है, जिन्हें भारतीय संविधान की धारा 16, 341, 342 में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़ी हुई जाति **(Scheduled Caste, Scheduled Tribe and Backward Class or Caste)** कहा गया है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में आरक्षित वर्ग के अन्तर्गत निम्न वर्ग आते हैं।

(अ) अनुसूचित जाति

(ब) अनुसूचित जनजाति

(स) पिछड़ी जाति

(द) विकलांग समूह

(प) भूतपूर्व सेना विभाग के कर्मचारी के परिजन आदि।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आरक्षित वर्ग के अन्तर्गत केवल उन्हीं शिक्षक –प्रशिक्षकों को शमिल किया जायेगा जिन्हें केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़े वर्ग के अन्तर्गत नियुक्त किया गया है।

2.1.5 अनारक्षित वर्ग

प्रस्तुत शोध, अध्ययन में अनारक्षित वर्ग से आशय उस वर्ग समूह से है जिन्हें केन्द्र एवं राज्य सरकार ने शिक्षा एवं सेवा में आरक्षण की श्रेणी के अन्तर्गत नहीं रखा है। मण्डल आयोग के दृष्टिकोण से ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य तथा उनकी अन्य उपजातियाँ अनारक्षित वर्ग के अन्तर्गत रखी है, से है।

2.1.6 शिक्षक

वह व्यक्ति है जो किसी शिक्षण संस्था में शिक्षा प्रदान करने के लिए विधिवत नामांकित होता है एवं वह विद्यार्थियों को अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाता है।

हुमायूँ कबीर – 'अध्यापक वास्वविक रूप से राष्ट्र का भाग्य निर्माता होता है। प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षकों से अभिप्राय उन शिक्षकों से है जो राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् से मान्यता प्राप्त शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान में कार्यरत है और जो बी0 एड0 के प्रशिक्षार्थियों को शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान करे रहें हैं, से है।

2.1.7 शिक्षण प्रतिबद्धता

“The degree of success of a teacher in performing instructional and other duties specified in his contract and demanded by the nature of his position”

शिक्षण प्रतिबद्धता से तात्पर्य है कि शिक्षक अपना शिक्षण कार्य कितने प्रभावशाली ढंग तथा सफलतापूर्वक कर रहा है तथा उसके शिक्षण कार्य से विद्यार्थी किस सीमा तक सन्तुष्ट है।

शिक्षण प्रतिबद्धता से अभिप्राय है शिक्षण कार्य के लिए योजना निर्माण एवं उसकी तैयारी, कक्षा प्रबन्ध, सम्प्रेषण क्षमता, उसके द्वारा छात्रों को प्रेरित करने का ढंग, शिक्षक के व्यक्तित्व गुण तथा छात्र एवं अन्य व्यक्तियों के साथ उसके सम्बन्धों से है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षण प्रतिबद्धता से आशय है कि एक शिक्षक की छात्र के प्रति प्रतिबद्धता, समाज के प्रति प्रतिबद्धता, शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता, उत्कृष्टता प्राप्ति के लिए प्रतिबद्धता एवं मौलिक मानवीय मूल्यों के प्रतिबद्धता आदि से है।

2.1.8 शैक्षिक आकांक्षा

प्रत्येक व्यक्ति अपना कुछ न कुछ लक्ष्य निर्धारित करता है। जिन्हें वह प्राप्त करना चाहता है या प्राप्त करने की लालसा रखता है। यह आवश्यक नहीं है कि जो व्यक्ति शैक्षिक आकांक्षा निर्धारित करता है वह उन्हें प्राप्त ही कर लें वह असफल भी हो सकता है। लक्ष्यों का निरूपण कई प्रयोगों द्वारा निरूपित होगा। इन प्रयोगों में आकांक्षा स्तर एक पूर्ण परिभाषित लक्ष्य को निरूपित करती है जो कि व्यक्ति की पहुँच के अन्तर्गत आती है। व्यक्ति सदैव उच्च्च लक्ष्य निर्धारित करता है इसलिये वह लक्ष्य को प्राप्त करने में कभी–कभी असफल भी हो जाता है।

कार्यात्मक परिभाषा –

जे0 डी0 फ्रैंक (1935) – 'किसी परिचित कार्य में व्यक्ति अपनी अतीत की उपलब्धि को जानते हुए भी भविष्य में जिस सीमा तक उपलब्धि की आकांक्षा करता है उसे व्यक्ति की आकांक्षा कहा जाता है।'

जेम्स ड्रेवर (1956) – 'आकांक्षा का अर्थ है कि एक व्यक्ति की अपने स्वानुभवों के द्वारा सफलता एवं असफलता की प्राप्ति।'

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक आकांक्षा से अभिप्राय व्यक्ति द्वारा अपने आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, स्वयं के लिए निर्धारित लक्ष्यों जिन तक कि वह पहुँचना या उन्हें प्राप्त करना चाहता है से है। यह लक्ष्य उच्च शिक्षा, पद, आर्थिक स्थिति, शैक्षिक सुविधाओं, सामाजिक एवं राजनैतिक शक्ति आदि के सन्दर्भ में होने से है।

2.1.9 व्यक्तित्व कारक

व्यक्तित्व का आशय हम व्यक्ति के बाह्य स्वरूप से लेते हैं लेकिन यदि व्यापक रूप से देखें तो व्यक्ति के समस्त बाह्य तथा आन्तरिक गुणों के समन्वय से ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

कार्यात्मक परिभाषा –

प्रो0 वुडवर्थ (1936) – 'व्यक्तित्व से उस व्यवहार का बोध होता है जो किसी को प्रिय लगता है तथा किसी को अप्रिय।'

प्रो0 ऑलपोर्ट (1948) – 'व्यक्तित्व व्यक्ति में मनोदैहिक व्यवस्थाओं का वह गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के अनुरूप उसके व्यवहार में अपूर्व अभियोजन का निर्धारण करता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में व्यक्तित्व कारकों से अभिप्राय है कि किसी भी व्यक्ति द्वारा किये गये बाह्य एवं आन्तरिक व्यवहार से है जिससे व्यक्ति उसके ज्ञान, भाव, क्रियायें शारीरिक गठन आदि से प्रभावित होकर कार्य करता है और उनको अपना आदर्श मानता है, से है।

3.0 अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्याय में अध्ययन के उद्देश्यों को दो वर्गों में रखा गया है।

3.1 प्रमुख उद्देश्य

1 शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थाओं में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता का अध्ययन करना।

2 शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थाओं में कार्यरत् शिक्षकों की शैक्षिक आकांशाओं का अध्ययन करना।

3 शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थाओं में कार्यरत् शिक्षकों के व्यक्तित्व कारकों का अध्ययन करना।

4 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों के व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

7 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की लैगिंक भिन्नता के परिसन्दर्भों में शिक्षण प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

8 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की लैंगिक भिन्नता के परिसन्दर्भों में शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

9 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की लैंगिक भिन्नता के परिसन्दर्भों में व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

10 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों के शिक्षण–अनुभवों के परिसन्दर्भों में शिक्षण प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

11 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों के शिक्षण–अनुभवों के परिसन्दर्भों में शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

12. आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों के शिक्षण–अनुभवों के परिसन्दर्भों में व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

13 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता शैक्षिक आकांक्षा एवं व्यक्तित्व कारकों को अभिप्रेरित करने वाले कारणों का अध्ययन करना।

14 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता शैक्षिक आकांक्षा एवं व्यक्तित्व कारकों को बढ़ाने के लिए अभिप्रेरित करने वाले उपायों का अध्ययन करना।

3.1.1 गौण उद्देश्य

1 आरक्षित वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षकों के सामाजिक – आर्थिक स्तर के परिसन्दर्भ में शिक्षण प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2 आरक्षित वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षकों के सामाजिक – आर्थिक स्तर के परिसन्दर्भ में शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3 आरक्षित वर्ग एवं आरक्षित वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के परिसन्दर्भ में व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4 आरक्षण के विभिन्न वर्णानुसार शिक्षण प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5 आरक्षण के विभिन्न वर्णानुसार शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6 आरक्षण के विभिन्न वर्गानुसार व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4.0 शोध अध्ययन की परिकल्पानायें

1 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता समान होती है।

2 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षकों की शैक्षिक आकांक्षाओं में भिन्नता नहीं होती है।

3 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षकों के व्यक्तित्व कारकों में महत्वपूर्ण अन्तर नही होता है।

4 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षकों की लैगिंक भिन्नता के परिसन्दर्भों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता समानता होती है।

5 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षकों की लैगिंक भिन्नता के परिसन्दर्भों में शैक्षिक आकांक्षाओं में भिन्नता नहीं होती है।

6 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षकों की लैंगिक भिन्नता के परिसन्दर्भों में व्यक्तित्व कारकों में महत्वपूर्ण अन्तर नही होता है।

7 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षकों के शिक्षण अनुभवों के परिसन्दर्भों में शिक्षण प्रतिबद्धता समान होती है।

8 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षक –प्रशिक्षकों के शिक्षण अनुभवों के परिसन्दर्भों में शैक्षिक आकाक्षाओं में भिन्नता नहीं होती है।

9 आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षकों के शिक्षण अनुभवों के परिसन्दर्भों में व्यक्तित्व कारकों में महत्वपूर्ण अन्तर नहीं होता है।

5.0 सीमांकन

1 प्रस्तुत शोध अध्ययन में आगरा एवं अलीगढ़ मण्डल में स्थित विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों तक सीमित रखा जायेगा।

2 प्रस्तुत शोध अध्ययन में आगरा एवं अलीगढ़ मण्डल में स्थित डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा से सम्बद्ध शिक्षक–प्रशिक्षक कॉलेजों, दयालबाग ऐजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा, मंगलायतन विश्वविद्यालय अलीगढ़ तथा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ में कार्यरत शिक्षक–प्रशिक्षकों तक सीमित रखा जायेगा।

3 प्रस्तुत शोध अध्ययन में आरक्षित वर्ग के अन्तर्गत केवल तीन वर्गों (यथा–अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़े वर्ग के अन्तर्गत आने वाली जातियों) के शिक्षक–प्रशिक्षकों तक ही सीमित रखा जायेगा।

4 आगरा मण्डल में स्थित सभी जनपदों (आगरा, मथुरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी) तथा अलीगढ़ मण्डल में स्थित (अलीगढ़, महामायानगर, एटा, काँशीराम नगर) के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र

में स्थित शिक्षक–प्रशिक्षक कॉलेजों में कार्यरत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़ी वर्ग के अन्तर्गत आने वाले शिक्षक–प्रशिक्षकों को ही अध्ययन में शामिल किया जायेगा।

5 प्रस्तुत शोध अध्ययन में विश्व विद्यालय स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् केवल बी.एड. प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं संस्थानों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों को ही शामिल किया जायेगा।

6.0 अध्ययन के चर

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अध्ययन के चरों को तीन वर्गों में रखा गया है।

6.1.1 स्वतंत्र चर

प्रस्तुत अध्ययन में स्वतंत्र चर के रूप में जातीय भिन्नता को लिया गया है जिसमें आरक्षित एवं अनारक्षित समूह को रखा गया है।

6.1.2 आश्रित चर

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आश्रित चर के अन्तर्गत शिक्षण प्रतिबद्धता, शैक्षिक आकांक्षा, और व्यक्तित्व कारकों को लिया गया है।

6.1.3 हस्तक्षेप रहित अथवा नियंत्रित चर

प्रस्तुत शोध अध्ययन में हस्तक्षेप रहित चर अथवा नियंत्रित चर के रूप में यौन भेद, सामाजिक, आर्थिक स्तर और शिक्षण अनुभव को लिया गया है।

7.0 न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श का चयन निम्न रूप में किया जायेगा।

7.1 जनसंख्या

जनसंख्या से अभिप्राय उन सभी व्यक्तियों वस्तु अथवा तथ्यों के समूह से होता है जो किन्हीं पूर्व परिभाषित विशेषताओं के क्षेत्र में आते हैं। अतः जनसंख्या के अन्तर्गत शिक्षक–प्रशिक्षक संस्थानों में कार्यरत समस्त शिक्षक–प्रशिक्षकों को सम्मिलित किया जायेगा।

7.1.1 न्यादर्श चयन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आगरा मण्डल, आगरा में स्थिति विश्वविद्यालयों एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों/महाविद्यालयों में कार्यरत 600 (300 पुरुष + 300 महिलाएँ) शिक्षक–प्रशिक्षकों का चयन आकस्मिक प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा चयन किया जायेगा।

7.1.2 उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा –

1 शिक्षण – प्रतिबद्धता परीक्षण–मीना बुद्धि सागर राठौर एवं मधुलिका शर्मा।

2 शैक्षिक आकांक्षा परीक्षण – वी0 पी0 शर्मा एवं ए0 गुप्ता।

3 व्यक्तित्व कारक परीक्षण – आर0 बी0 कैटिल के 16 पी0 एफ0 परीक्षण भारतीय अनुकूलन एस0 डी0 कपूर।

7.1.3 शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक शोध विधि के अन्तर्गत तुलनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया जायेगा।

7.1.4 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन के सन्दर्भ में प्रदत्तों के विश्लेषण के निमित्त प्राप्त प्रदत्तों की प्रकृति के अनुसार वर्णनात्मक एवं विवेचनात्मक दोनों ही प्रकार की सांख्यिकीय प्रविधियों का अनुप्रयोग किया जायेगा।

8.0 अध्ययन का औचित्य

समाज में शिक्षक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को वैदिक परम्परायें, ज्ञान एवं तकनीकी कौशल पहुँचाने का केन्द्र है। सभ्यता के प्रकाश को प्रज्वलित रखने में सहायता देता है। इसलिये शिक्षक को समाज एवं राष्ट्र का निर्माता भी कहा जाता है। ऐसे शिक्षकों का राष्ट्रीय अपेक्षाओं की पूर्णतः में महत्वपूर्ण योगदान दिखायी देता है क्योंकि विभिन्न प्रकार की शिक्षण संस्थाओं का सम्बन्ध छात्रों के सर्वागीण विकास से सम्बन्धित है वस्तुतः शिक्षण संस्थाओं का प्रमुख उद्देश्य छात्रों को नीवन तथ्यों से सम्बन्धित ज्ञान, विशिष्ट कौशल एवं विशिष्ट अभिवृत्तियों का विकास करने से है जिससे वह भावी जीवन में शैक्षिक उपलब्धियों के आधार पर शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास करने में सक्षम बन सकें, लेकिन आज शिक्षा के स्तर में लगातार गिरावट की स्थिति बनी हुई है और यह स्थिति लगातार गिरती ही जा रही है इस स्थिति में शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता कहाँ तक उत्तरदायी है क्या शिक्षक अपने उत्तरदायित्वों को सही ढंग से निभाते हैं, उत्तरदायित्वों को सही ढंग से निभाने के पीछे कहीं उनकी शैक्षिक आकांक्षायें तो बाधक नहीं है। इन बाधाओं के समाधान करने में उनके व्यक्तित्व कारक तो प्रभावित नहीं करते हैं, का अध्ययन प्रस्तुत शोध समस्या में किया जायेगा। शोध के परिणामों से शिक्षण प्रतिबद्धता, शिक्षण विधियों में सुधार, पाठ्यक्रम की पुनः संरचना एवं मूल्यांकन की विधियों एवं प्रविधियों में सुधार कर अपने शिक्षण को प्रभावपूर्ण बना सकेगें। और शिक्षक–प्रशिक्षक राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेंगें। शिक्षा के स्तर में आ रही गिरावट को रोके जाने में पर्याप्त मदद मिल सकेगी। इसके साथ ही साथ सामान्य जाति, पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षक–प्रशिक्षक अपनी अलग–अलग शिक्षण प्रतिबद्धताओं, शैक्षिक आकाँक्षाओं एवं व्यक्तित्व के कारकों से परिचित होकर अपने शिक्षण कार्य में सुधार कर सकेगें।

Bibliography

1	अकौक, आर. एल.	1991	The Design of Social Research, Chicago Chicago University Press
2	अम्बेडकर, भीमराव	1951	जाति विच्छेद, प्रथम प्रकाशित, नई दिल्ली, कर्नाटक सरकार, अमृत बुक कम्पनी।
3	अस्थाना, बी. बी.	2012	Statistics in behavioral sciences Shri Vinod Pustak Mandir, Agra
4	भाटिया, बी. आर.	1989	Dictionary of Psychology, New Delhi, Anmol Publication 9-10
5	बेस्ट, जे. डब्लू.	1959	Research in Education, New Delhi, Prentice Hall of India (Pvt.) Ltd. India
6	भारतीय संविधान	1984	विधि मन्त्रालय, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
7	भट्टाचार्य, जी0 सी0	2002	'दक्षता आधारित तथा प्रतिबद्धता उन्मुख शिक्षक–शिक्षा प्रणाली की व्यावहारिक उपादेयता' भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष–20, अंक–4, अप्रैल–2002, 30–41
8	भट्टाचार्य, जी0 सी0	2003	अध्यापक शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, हॉस्पीटल रोड, आगरा।
9	गौतम, रजनी	1990	अनुसूचित जाति तथा अन्य जातियों के विद्याथियों की सृजनात्मकता, मूल शैक्षिक उपलब्धि तथा शिक्षा की ओर अभिवृत्तियों का अध्ययन, अप्रकाशित पी0 एच0 डी0 शोध प्रबन्ध (शिक्षा) आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।
10	गिलफोर्ड, जे.पी. एवं	1978	Fundamental Statistics in Psychology in educational,

	वेगमन		4th International Students, New York, Mc Graw Hill, Koga Krish Ltd. 92-104
11	गुप्ता, मधु	1994	अनुसूचित जाति एवं सर्वण जाति के प्रथम और प्रथमोत्तर शिक्षित पीढ़ी के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कतिपय मनोसामाजिक कारकों का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित पी0–एच0डी0 शोध प्रबन्ध (शिक्षा) डी0ई0आई0 (डीम्ड विश्वविद्यालय), दयालबाग, आगरा।
12	ज्ञानानी, टी0 सी0 एवं गुप्त, मधु	1996	शैक्षिक पीढ़ी अन्तराल के परिप्रेक्ष्य में पिछड़े वर्ग के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी समस्याओं का प्रभाव, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष–15, अंक–2, जुलाई–दिसम्बर – 1996, 13–21
13	कपिल, एच0 के0	2011	सांख्यिकी के मूलतत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, हॉस्पीटल रोड, आगरा।
14	कपूर, जे. एन.	1999	Why are our Teacher Alienated form the Higher Education System? University New[Vol.-37, No.-2, Jan. 1999. 5-6
15	कौशला, डी. एन.	1998	Competency based and commitment oriented Teacher education for quality School Education (Pre-Service Educational) New Delhi, NCTE, 30-43
16	मनु प्रतीक	2002	What makes a Teacher a professional University, New Delhi, vol.40, no.22 June 2002, 3-12
17	माथुर, एस0 एस0	2012	शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा
18	मंगल, एस0 के0	2011	शिक्षा मनोविज्ञान, पी0एच0आई0 लर्निम प्राईवेट

			लिमिटेड, नई दिल्ली।
19	राय, पी0 एन0	1985	अनुसन्धान परिचय, लक्ष्मी नारायन प्रकाशन, संजय प्लेस, आगरा 119–148
20	शास्त्री, के0 एन0	2009	उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
21	सी. अब्राहम, एम.एफ.	1992	Modern Sociological Theories an Introduction , Delhi : Oxford Union Sily Press, 176-178
22	सिन्हा, एस0 सी0	2006	शैक्षिक अनुसन्धान, नई दिल्ली, विकास प्रकाशन हाऊस।
23	श्रीवास्तव, आर.सी. एवं श्रीवास्तव, सुमित्रा	2004	Issues ian Education and Society, Regency Publication, New Delhi, 147-175
24	सुखिया, एस0 पी0 एवं मेहरोत्रा, आर0 एन0	1970	शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगर, पू0 स0 218–241
25	स्वामी, पण्डित तुलसीराम	1971	मुनस्मृति, गोपाल ब्रदर्स, देहली, श्री काशीनाथ ग्रन्थमाला, 114–120
26	यादव, प्रतिभा	2012	उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, साहित्य प्रकाशन, आगरा।

www.Google.search

www.wicky pedia com

www.dei.ac.in

Websites of UGC NCERT, NCTE, NUEPA and Dr. BRAU

www.shodganga.com